

वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं। (अल-बकरा, 5)

ईश्वर ने यह भी कहा। यही लोग हैं जिनपर उनके रब की विशेष कृपाएँ हैं और दयालुता भी, और यही लोग हैं जो सीधे मार्ग पर हैं। (अल-बकरा, 157)

और ईश्वर ने यह भी कहा। फिर यदि मेरी ओर से तुम्हें मार्गदर्शन पहुँचे, तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुपालन किया वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न तकलीफ में पड़ेगा। (ता-हा, 123)

मार्गदर्शन का मतलब पथभ्रष्ट से दूर रहना है। दयालुता का मतलब अप्रसन्नता से दूर रहना है। इसी बात को ईश्वर ने सूर ता-हा के प्रारंभ में बताया। हमने तुमपर यह खुरआन इसलिए नहीं उतारा है कि तुम मशक़क़त में पड़ जाओ। (ता-हा, 2)

मानव के लिए खुरआन को अवतरित करने और उससे अप्रसन्नता को दूर करने की समस्या को एक साथ विवरण किया गया। जैसे खुरआन के अनुयायियों के पक्ष में इसी सूर के अंत में ईश्वर ने यह कहा। वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न तकलीफ में पड़ेगा। (ता-हा, 123)

मार्गदर्शन, अनुग्रह और दयालुता सहसंबन्धी हैं। जो एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते। इसी प्रकार पथभ्रष्ट और अप्रसन्नता सहसंबन्धी हैं। जो एक दूसरे से बिदा नहीं हो सकते। ईश्वर ने कहा। निस्संदेह अपराधी लोग गुमराही और दीवानेपन में पड़े हुए हैं। (अल-कमर, 47)

सईर एक वचन है। इसका बहुवचन सुउर है। इसका माना अप्रसन्नता कि अंत वाला दण्ड है। अपराधी लोगों के विश्रामगृह के मुकाबले में ईश्वर ने इसी सूर में उर रखनेवालों के विश्रामगृह के प्रति यह कहा। निश्चय ही उर रखनेवाले बागों और नहरों के बीच होंगे, प्रतिष्ठित स्थान पर, प्रभुत्वशाली सम्राट के निकट। (अल-कमर, 54-55)



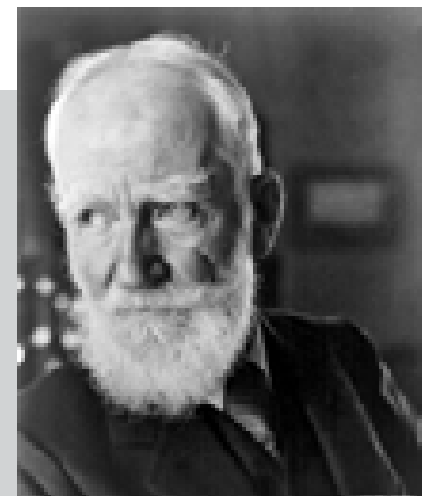
यही प्रसन्नता का मार्ग है। अगर आप इस पर चलना हैं और इसका अनुयायी बनना चाहते हैं। यह मार्ग मिथक, आध्यात्मिक बिगाड़ या केवल विचार पर आधारित नहीं है। यह प्रसन्नता का मार्ग है। और यही ज्ञान और सभ्यता का मार्ग है।

मानवता को मुक्ती दिलाने वाला

न्याय कि बात यह है कि मुहम्मद को मानवता का मुक्ती दिलाने वाला कहा जाये। मेरा विश्वास है कि मुहम्मद के समान कोई व्यक्ति इस आधुनिक संसार का शासन करले तो वह संसार के सारे आपदाधियों को खतम करदेगा और इसमें प्रसन्नता और शांती पैदा करदेगा

बर्नार्ड शाह

ब्रिटीष लेखक



https://www.path-2-happiness.com/hi